Chap-8

अष्टम अध्याय

*

:

:

:

:

:

:

:

:

आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा के
तेलुगु भाषी छात्रों के हिन्दी
अधिगम सम्बन्धी
समस्याएँ,
कठिनाइयाँ
एवं
सुझाव

अष्टम अध्याय

" आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा के तेलुगु भाषी छात्रों के हिन्दी अधिगम सम्बन्धी समस्याओं एवं कठिनाइयों का शोधपूर्ण अध्ययन ।"

शोधकर्ता ने विभिन्न शोध साधनों की सहायता से आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा के तेलुगु भाषी छात्रों के हिन्दी अधिगम संबंधी वास्तविक कठिनाइयों के कारणों को वैज्ञानिक ढंग से प्रकाश में लाने का प्रयत्न किया है । भाषा अध्ययन में ये कारण किस प्रकार बाधक बने हैं इनको पूर्व अध्यायों में प्राप्त दत्त के आधार पर विश्लेषण किया गया है ।

इस अध्याय में शोधकर्ता ने प्राप्त सामग्री को आधार मानकर प्रत्येक समस्या का स्पष्टीकरण करते हुए उस समस्या को जन्म देनेवाले विभिन्न कारण और उनके निवारण करने के उपयुक्त सुझावों को प्रस्तुत किया है ।

शोधकर्ता ने आठवीं कक्षा के छात्रों के हिन्दी अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को विषय की स्पष्टता को दृष्टि में रखकर तीन भागों में विभाजित किया है ।

I. । 8वीं कक्षा के छात्रों के हिन्दी ~~स्तर संबंधी समस्याओं~~ अधिगम पर पड़नेवाले विभिन्न प्रभावों का अध्ययन :

(अ) 8वीं कक्षा के छात्र हिन्दी में कमज़ोर रहने की समस्या ।

(आ) हिन्दी के प्रति सरकार का दृष्टिकोण - एक समस्या ।

(इ) हिन्दी के प्रति आन्ध्र प्रदेश सरकार का दृष्टिकोण : एक समस्या।

(ई) हिन्दी के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण : एक समस्या ।

(उ) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों के हिन्दी वातावरण - एक समस्या ।

II 8वीं कक्षा के छात्रों के भाषा अधिगम सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन :

1 हिन्दी शिक्षण के आरंभ की समस्या ।

2 भाषा कौशल की समस्या का अध्ययन ।

(अ) श्रवण कौशल ।

(आ) भाषण कौशल

(इ) वाचन कौशल ।

(ई) लेखन कौशल ।

3 8वीं कक्षा के छात्रों की व्याकरण समस्या का अध्ययन ।

III भाषा अधिगम के प्रधान साधनों से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन

1 पाठ्यक्रम समस्या का अध्ययन ।

2 हिन्दी पाठ्यपुस्तक समस्या का अध्ययन ।

3 शिक्षण विधि समस्या का अध्ययन ।

4 सहायक सामग्री समस्या का अध्ययन ।

5 हिन्दी अध्यापक संबंधी समस्या का अध्ययन ।

6 हिन्दी मूल्यांकन समस्या का अध्ययन ।

प्रप्रथम शोधकर्ता ने शोध-कार्य से प्राप्त सामग्री के आधार पर प्रत्येक भाग की समस्याओं को लेकर उनको संबंधित कठिनाइयों के कारण एवं शोधपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किया है ।

8वीं कक्षा के छात्रों का हिन्दी स्तर संबंधी समस्याओं का अध्ययन :

शोधकर्ता ने यह अनुभव किया है कि छात्रों के हिन्दी स्तर निम्न होने में भाषा अधिगम एवं उनसे संबंधित प्रधान साधनों के अतिरिक्त अन्य कारणों का भी प्रभाव रहा है । इनसे संबंधित अन्य प्रभावों का अध्ययन इसलिए आवश्यक है कि इनका संबंध छात्रों के स्तर से है । छात्रों के हिन्दी अध्ययन में निम्नांकित प्रभाव कठिनाइयों को उपस्थित करने में सक्षम है' । इन कठिनाइयों को दूर करने के कारणों को शोधकर्ता ने प्राप्त शोध सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किया है । 8वीं कक्षा के छात्रों को हिन्दी स्तर पर प्रभाव डालनेवाली समस्याएँ निम्न प्रकार हैं ।

(अ) समस्या : आठवीं कक्षा के छात्र हिन्दी में कमज़ोर रहने की समस्या :

छात्रों के सामने आनेवाली कठिनाइयों के कारण :

1) हिन्दी सीखने के प्रति छात्रों में रुचि नहीं है ।
2) हिन्दी सीखने से छात्रों को कोई विशेष लाभ होने की संभावना नहीं है ।
3) हिन्दी के अंकों को कुल अंकों में नहीं मिलाते हैं ।
4) हिन्दी का शिक्षण 6वीं कक्षा से आरंभ होता है ।
5) प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है ।
6) पाठ्यपुस्तक का स्तर ऊँचा है ।
7) हिन्दी शिक्षण तेलुगु माध्यम से दिया जाता है ।

8) अन्य विषयों को पढ़ानेवाले अध्यापक हिन्दी को पढ़ाते है ।

9) भाषा कौशल की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है ।

सु झा व :

1) छात्रों को हिन्दी सीखने में सरकार की ओर से विशेष लाभ एवं प्रोत्साहन देना चाहिए । हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों का उचित वितरण एवं नौकरी देते समय हिन्दी अंकों को प्राथमिकता के रूप में लेना चाहिए ।

2) छात्रों की रुचि, सुझाव के साथ-साथ प्रान्तीय परिवेश में पुस्तक के गद्य पाठों को सरल भाषा में लिखकर उनमें रुचि उत्पन्न करना चाहिए ।

3) हिन्दी में उत्तीर्ण होना अनिवार्य कर देना चाहिए और हिन्दी के अंकों को हर स्तर पर कुल अंकों में जोड़ना चाहिए ।

4) आन्ध्र के छात्रों को भी अन्य प्रान्तों के जैसा 5वीं कक्षा से ही हिन्दी को पढ़ाना चाहिए । इससे छात्रों पर हिन्दी का भार अधिक न पडेगा और वे विषय को क्रमानुसार सीख लेते हैं ।

5) प्रारंभिक कक्षाओं में अध्यापक, मौखिक अभिव्यक्ति पर अधिक ध्यान देना चाहिए, बाद में छात्रों को सरल एवं सुंदर शैली में वाक्य-रचना सिखानी चाहिए ।

6) हिन्दी अध्यापक हिन्दी शिक्षण को हिन्दी माध्यम से ही देना चाहिए । छात्रों से बातचीत करते समय अध्यापक छात्रों की मातृभाषा में प्रयुक्त

समानार्थी तेलुगु शब्द जो हिन्दी में प्रयोग होते हैं उनको ध्यान में रखना चाहिए ।

7) इसके लिए हिन्दी अध्यापक हिन्दी शिक्षण प्राप्त करना चाहिए । अन्य विषयों के शिक्षकों को हिन्दी पढ़ाने के लिए कक्षा में नहीं भेजना चाहिए । इन अध्यापकों से कभी कभी हिन्दी की अवहेलना होने की संभावना भी रहती है ।

8) अध्यापक मातृभाषा की वाक्य-रचना के आधार पर लेखन का अभ्यास करना चाहिए । श्यामपट की सहायता से साधारण गलतियों को समझाना आवश्यक है ।

9) भाषा कौशल का अभ्यास क्रम से कराना चाहिए ।

(आ) समस्या : हिन्दी के प्रति भारत सरकार का दृष्टिकोण - एक समस्या ।

कठिनाइयों के कारण :

1) भारत में राष्ट्रभाषा समस्या पर निर्णय नहीं हुआ है ।
2) जनता पर अंग्रेजी का प्रभाव है ।
3) हिन्दी को अनिवार्य बनाने में सभी प्रान्तीय सरकार सहमत नहीं है ।
4) हिन्दी का प्रचार नाम मात्र के रूप में हो रहा है ।
5) हिन्दी को सम्पर्क भाषा का सही स्थान प्राप्त नहीं है ।
6) सरकार हिन्दी को विधिवत् शिक्षा संस्थाओं एवं प्रशासन में अनिवार्य रूप से लागू करना नहीं चाहती है ।

सुझाव :

1) राष्ट्रभाषा समस्या पर एक निर्णय लेकर प्रान्तीय सरकारों को इसके सही अमल पर केन्द्रीय सरकार को आदेश देना चाहिए ।

2) सभी प्रशासनिक कार्यालयों में प्रान्तीय भाषा के साथ साथ हिन्दी का प्रयोग विधिवत् करना चाहिए ।

3) राष्ट्रभाषा पर गोष्ठियाँ, सभाएँ एवं कवि सम्मेलनों का आयोजन करके हिन्दी का महत्व एवं शालीनता का प्रचार जनता में होना चाहिए ।

4) केन्द्रीय सरकार अहिन्दी भाषा-भाषी छात्रों को हिन्दी पाठ्य-पुस्तकें मुफ्त में देने की व्यवस्था करनी चाहिए ।

5) शिक्षा के हर स्तर पर हिन्दी विषय को ऐच्छिक रूप में लेनेवाले सभी छात्रों को छात्रवृत्तियाँ देनी चाहिए ।

6) केन्द्रीय सरकार की ओर से शिक्षा संस्थाओं में विभिन्न हिन्दी कार्यक्रमों का आयोजना करना चाहिए ।

7) केन्द्र सरकार अहिन्दी प्रान्तों के कर्मचारियों को नौकरी में वृद्धि करते समय 'हिन्दी परीक्षा ' में उत्तीर्ण होना अनिवार्य समझे और ऐसे उत्तीर्ण कर्मचारियों को एक विशेष वेतनवृद्धि भी दें ।

8) केन्द्र एवं प्रान्तीय सरकार प्रत्येक पाठशाला को हिन्दी की छोटी-छोटी रोचक पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ भेजने की व्यवस्था करें ।

(इ) हिन्दी के प्रति आन्ध्र प्रदेश सरकार का दृष्टिकोण - एक समस्या

कठिनाइयों के कारण :

1) आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा त्रिभाषा सूत्र का सही पालन नहीं होना ।

2) सरकार तेलुगु को सभी स्तरों पर अनिवार्य बनाने में सतर्क हैं, परन्तु हिन्दी के प्रति मूक हैं ।

3) आन्ध्र प्रदेश सरकार ने हिन्दी के प्रचार को केन्द्रीय विषय माना है।

4) आन्ध्र प्रदेश के कार्यालयों में हिन्दी का व्यवहार नहीं है ।

5) प्रादेशिक सरकार की दृष्टि में हिन्दी योग्यता का महत्व नहीं है ।

6) उच्च माध्यमिक पाठशालाओं में हिन्दी के लिए केवल 3 घण्टे का समय दिया जाता है ।

7) एस् · एस् · सी · के हिन्दी अंकों को 20% कर दिया गया है और छात्रों से प्राप्त हिन्दी अंकों को कुल अंकों में नहीं मिलाते हैं ।

8) पाठशालाओं में हिन्दी पुस्तकें तथा-पत्र-पत्रिकाएँ नहीं होती हैं ।

9) उस्मानिया विश्वविद्यालय के कालेज आफ एजुकेशन एवं राष्ट्रीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्था में हिन्दी विभाग नहीं है ।

10) हिन्दी भाषा संबंधी शोधकार्य की कोई संस्था नहीं है ।

उपर्युक्त कारणों के परिपेक्ष्य में शोधकर्ता ने निम्न सुझावों को छात्रों के भाषा अधिगम में वृद्धि करने के लिए प्रस्तुत किया है ।

सु झा व :

1) आन्ध्र प्रदेश में तेलुगु के साथ-साथ हिन्दी का अध्यापन अनिवार्य बनाना चाहिए ।

2) आन्ध्र प्रदेश सरकार को त्रिभाषा सूत्र का सही पालन करना चाहिए ।

3) सरकार को कार्यालयों में तेलुगु के साथ साथ हिन्दी का भी व्यवहार करने के आदेश देना चाहिए । कर्मचारियों की हिन्दी योग्यता को वेतन-वृद्धि (Promotion)करते समय विशेष महत्व देना चाहिए । हिन्दी योग्यता प्राप्त कर्मचारियों को सरकार एक इन्क्रमेंट देकर प्रोत्साहन करना चाहिए ।

4) हिन्दी पढ़ाने के लिए सप्ताह में 6 घण्टों का समय देना आवश्यक है । इससे छात्रों को भाषा सीखने का अभ्यास निरंतर होते रहता है ।

5) हिन्दी पढ़नेवाले इन छात्रों को पाठ्यपुस्तकें मुफ्त में देनी चाहिए।

6) हिन्दी के प्रचार एंव प्रसार के लिए सरकार विशेष बजट की व्यवस्था करें ।

7) सरकार को प्रादेशिक भाषा की पुस्तकों का अनुवाद हिन्दी में तथा हिन्दी पुस्तकें का अनुवाद प्रादेशिक भाषा में कराना चाहिए ।

8) आन्ध्र प्रान्तमें हिन्दी का अध्ययन 5वीं कक्षा से आरंभ करना चाहिए इससे छात्र हिन्दी ध्वनियों का परिचय तुरंत प्राप्त कर लेते हैं । इससे छात्रों की प्रगति उच्च कक्षाओं में ठीक होगी ।

9) अन्य विषयों के जैसा हिन्दी में उत्तीर्ण होने के लिए उत्तीर्णांकों को 35 बना देना चाहिए ।

10) एस • सी • इ • आर • टी •जैसे शोध संस्था में एक हिन्दी विभाग खोलना चाहिए । यह छात्र एवं अध्यापक दोनों के लिए मार्गदर्शक बनेगा ।

11) तेलंगाना के जैसा आन्ध्र प्रान्त में भी सरकार की ओर से हिन्दी प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना होनी चाहिए ।

12) पाठ्यपुस्तक को पढ़ाने के हेतु शिक्षकों को मार्गदर्शन की पुस्तकों का निर्माण होना चाहिए ।

13) प्रत्येक उच्च प्राथमिक कक्षा की पाठशाला के लिए द्वितीय ग्रेड हिन्दी पंडित और उच्च माध्यमिक कक्षा की पाठशाला के लिए प्रथम श्रेष्ठ हिन्दी पंडित की नियुक्ति होनी चाहिए । आन्ध्र प्रान्त के कई स्कूलों में हिन्दी पंडित नहीं हैं । इससे हिन्दी शिक्षण सुचारू रूप से नहीं होता है ।

14) प्रत्येक ज़िले के लिए एक हिन्दी विशेषज्ञ की नियुक्ति होनी चाहिए, जो समय समय पर अध्यापकों की अध्यापन संबंधी कठिनाइयों एवं समस्याओं को दूर करने में सहायक सिद्ध हो सकता है ।

15) आन्ध्र प्रान्त के अध्यापकों को सरकार की ओर से हिन्दी प्रान्तों में स्थित संस्थाओं में पुनश्चर्या शिक्षण प्राप्त करने हेतु भेजना चाहिए ।

16) प्रत्येक पाठशाला के वाचनालय को हिन्दी की छोटी छोटी पुस्तकें सरकार को भेजनी चाहिए । इन पुस्तकों को रुचि के साथ पढ़कर छात्र अपना भाषा ज्ञान बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं ।

(ई) <u>हिन्दी के प्रति छात्रों का दृष्टिकोण : एक समस्या :</u>

शोधकर्ता ने हिन्दी अधिगम में व्याघात पहुँचाने वाली निम्न कारणों को शोध विषय के आधार पर पहचाना है ।

<u>कठिनाइयों के कारण :</u>

1) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों को हिन्दी अध्ययन से कोई विशेष लाभ नहीं होता है।

2) हिन्दी सीखने के प्रति छात्रों की रुचि नहीं है ।

3) हिन्दी छात्रों के लिए एक अप्रमुख विषय है ।

4) हिन्दी छात्रों के लिए कठिन विषय है ।

सुझाव :-

उपर्युक्त कारणों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने हिन्दी के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को बदलने के लिए निम्न सुझाव प्रस्तुत किया है ।

1) हिन्दी अध्यापक स्वयं हिन्दी का महत्व एवं उसकी राष्ट्रीय एकता की भावना से छात्रों को अवगत कराना चाहिए ।

2) छात्रों को हिन्दी सीखने के प्रयोजन को ठीक ढंग से समझाना चाहिए ।

3) पाठशाला की ओर से छात्रों को हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें, छोटी छोटी कहानियों की पुस्तकें मुफ्त में देकर प्रोत्साहित करना चाहिए । हिन्दी विषय में सर्वप्रथम अंक प्राप्त किये छात्रों को पुरस्कार देना चाहिए ।

4) हिन्दी अध्यापक छात्रों को विभिन्न संस्थाओं के द्वारा संचालित हिन्दी परीक्षाओं में बिठाने का प्रयत्न करना चाहिए और छात्रों को पाठशाला के बाद भी इन परीक्षाओं की पुस्तकें पढ़ानी चाहिए ।

5) हिन्दी को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाना चाहिए । एस्0 एस्0 सी0 में हिन्दी अंकों को कुल योग में मिलाना चाहिए ।

6) हिन्दी अध्यापक नवीन विधियों की सहायता से विषय को सरल बनाना चाहिए । इससे छात्र हिन्दी सीखने में आसानी का अनुभव करेंगे ।

(उ) **आन्ध्र प्रान्त के छात्रों के हिन्दी वातावरण की समस्या :**

कठिनाई के कारण :

(1) आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी का वातावरण नहीं है । पाठशालामें छात्र तेलुगु में ही बातचीत करते हैं ।

(2) हिन्दी शिक्षण छठवीं कक्षा से प्रारंभ किया जाता है ।

(3) आन्ध्र प्रान्त में शिक्षा का माध्यम तेलुगु तथा अंग्रेजी है ।

(4) साधारण प्रजा भी बाज़ारों में तेलुगु का ही व्यवहार करते हैं ।

(5) छात्रों को पाठशालाओं में हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ प्राप्त नहीं होती हैं ।

(6) सप्ताह में पाठशालाओं में हिन्दी शिक्षण के लिए तीन घंटों का समय निर्धारित है ।

(7) हिन्दी अध्यापक छात्रों को हिन्दी शिक्षण तेलुगु माध्यम से देते हैं ।

हिन्दी वातावरण संबंधी उपर्युक्त कारणों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने छात्रों को हिन्दी का वातावरण बनाये रखने में निम्न सुझाव प्रस्तुत किया है ।

सुझाव :

(1) आन्ध्र के छात्रों को हिन्दी प्रदेशों में भ्रमण करने का अवसर देना चाहिए । इससे उनको हिन्दी ध्वनियों का परिचय, उच्चारण विधि एवं भाषा के सहज रूप को आत्मसात करने का मौका मिलता है ।

(2) हिन्दी अध्यापक स्वयं कक्षा में छात्रों से हिन्दी में ही बातचीत करें और उनको हिन्दी माध्यम से ही पढ़ाना चाहिए ।

(3) हिन्दी का शिक्षण पाँचवी कक्षा से प्रारंभ करना चाहिए इससे छात्रों को हिन्दी ध्वनियों का परिचय जल्दी प्राप्त होता है । इससे उनको नवीन भाषा के वातावरण में भाषा को जल्दी सीखने का मौका मिलता है ।

(4) आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी शिक्षक सरल शब्दों में छात्रों से वार्तालाप करना चाहिए और स्वयं छात्रों को हिन्दी में बातचीत करने का प्रोत्साहन देना चाहिए ।

(5) सप्ताह में प्रतिदिन हिन्दी का शिक्षण देना चाहिए इससे छात्रों को हिन्दी वातावरण प्राप्त होता है । किसी नवीन भाषा सीखने में वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान होता है ।

(6) आन्ध्र की पाठशालाओं में हिन्दी समाचार पत्रों के साथ साथ हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ होनी चाहिए । हिन्दी वातावरण को बनाये रखने में इनका प्रमुख स्थान है ।

(7) हिन्दी अध्यापक शब्दार्थों को हिन्दी में ही देना चाहिए ।

(8) हिन्दी अध्यापक तेलुगु के प्रसिद्ध कविताओं का अनुवाद हिन्दी में करके छात्रों को सुनाना उचित होगा और सरल हिन्दी में प्रमुख विषयों को आधार लेकर कविता रचना करनी चाहिए ।

(9) हिन्दी अध्यापक आन्ध्र प्रान्त के छात्रों के लिए हिन्दी भाषण तथा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करें और समय समय पर पाठशालाओं में तुलसी जयंती, हिन्दी- दिवस या किसी कवि के जीवनी से परिचय संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन करके हिन्दी वातावरण को बनाये रखना चाहिए ।

(10) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए हिन्दी अध्यापक छोटे छोटे एकांकी नाटकों को पाठशाला-दिवस आदि विशेष दिनों में छात्रों से प्रदर्शित करवाना चाहिए ।

II. आन्ध्र प्रान्त के आठवीं कक्षा के छात्रों के भाषा अधिगम संबंधी समस्याओं का अध्ययन :

भाषा का अध्ययन एक सहज प्रक्रिया है । द्वितीय भाषा का अध्ययन एक कृत्रिम वातावरण में होता है । भाग-। में शोधकर्ता ने द्वितीय भाषा के रूप में छात्र हिन्दी का अध्ययन करते समय उनके सामने आनेवाली विभिन्न समस्याओं एवं कठिनाइयों के कारणों को दर्शाते हुए शोधपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किया है ।

इस भाग में शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्त के छात्रों के भाषा कौशल संबंधी समस्याओं और भाषा अधिगम में व्याघात डालनेवाली कठिनाइयों के कारणों को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करके उनको निवारण करने के सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं ।

(1) हिन्दी शिक्षण के आरंभ की समस्या :

कठिनाईयों के कारण :-

(1) विद्वानों में एक मत नहीं है ।

(2) आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी 6 वीं कक्षा से आरंभ होती है ।

(3) प्रत्येक कक्षा के लिए आधारभूत शब्दावली का निर्णय न होना ।

(4) आन्ध्र प्रदेश सरकार से हिन्दी भाषा सम्बन्धी शोधकार्य न होना ।

(5) इस विषय पर सरकार के सामने निर्दिष्ट विचार नहीं हैं ।

इन कठिनाइयों के कारणों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने निम्न महत्वपूर्ण सुझावों को प्रस्तुत किया है ।

सुझाव :

(1) आन्ध्र के छात्रों को हिन्दी का अध्ययन पाँचवी कक्षा से आरंभ करना उचित होगा । इस पर अलग अलग विद्वानों ने विभिन्न मत प्रकट किये हैं । पाँचवी कक्षा के छात्र मातृभाषा के शब्द भण्डार के साथ साथ द्वितीय भाषा को सीखने में समर्थ होते हैं ।

(2) तेलुगु भाषा-भाषी छात्रों को हिन्दी सिखाते समय किस कक्षा में कितने शब्दों को सिखाने चाहिए इस पर अभीतक कोई निर्णय नहीं हुआ है । सरकार एस० सी० इ० आर० टी० में इसकी व्यवस्था करनी चाहिए ।

(3) हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों की एक गोष्ठी का आयोजन करके सरकार को इस पर एक निर्णय लेना चाहिए ।

(4) सरकार छात्रों की द्विभाषी योग्यता को शोधकार्य के द्वारा पहचानना चाहिए ।

(5) संपूर्ण आन्ध्र प्रदेश के लिए पाठ्यक्रम एक ही होने के कारण हिन्दी शिक्षण का आरंभ भी पाँचवी कक्षा से होना चाहिए ।

(2) भाषा-कौशल संबंधी समस्याएँ :

(अ) श्रवण कौशल - एक समस्या :

आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले आन्ध्र के छात्रों के सामने श्रवण कौशल एक समस्या है । शोधकर्ता ने श्रवण कौशल समस्या का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया है ।

कठिनाइयों के कारण :

(1) आन्ध्र के छात्र हिन्दी ध्वनियों को सुनकर समझ नहीं सकते हैं ।
(2) छात्र हिन्दी तथा तेलुगु ध्वनियों का अन्तर नहीं समझते हैं ।
(3) छात्र स्वनिम, बलाघात तथा अनुतान का अन्तर नहीं समझते हैं ।
(4) प्रारंभिक कक्षाओं में हिन्दी ध्वनियों को सिखाने का प्रयत्न नहीं करना ।
(5) अध्यापक हिन्दी भाषा का व्यवहार कम करना।
(6) प्रतिदिन के जीवन में हिन्दी का व्यवहार कम होना ।

हिन्दी भाषा को सुनते समय 8 वीं कक्षा के छात्रों के सामने उपर्युक्त श्रवण कठिनाइयों के कारणों को शोधकर्ता ने प्राप्त दत्त के आधार से प्रस्तुत किया है । इन कठिनाइयों को निम्न उपायों से निवारण कर सकते हैं ।

सुझाव :

(1) हिन्दी अध्यापक को कक्षा में हिन्दी भाषा का प्रयोग करना चाहिए । पाठ को सरल हिन्दी वाक्यों में समझाना चाहिए जिससे छात्र हिन्दी की नवीन ध्वनियों से परिचय प्राप्त कर सकते हैं ।
(2) हिन्दी अध्यापक को छात्रों को हिन्दी में बातचीत करने का प्रोत्साहन देना चाहिए । अध्यापक स्वयं हिन्दी में छात्रों से वार्तालाप करना चाहिए । वार्तालाप करने में अध्यापक उन शब्दों को हिन्दी में प्रयोग करना चाहिए जो तेलुगु में समानार्थ रखते हैं ।
(3) हिन्दी अध्यापक छात्रों को तेलुगु तथा हिन्दी के उच्चारण भेद को समझाना चाहिए । हिन्दी में उच्चरित संस्कृत शब्दों के उच्चारण को स्पष्ट रूप से समझाना आवश्यक है ।

(4) प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक शिक्षण पर जोर देना चाहिए । अब इससे छात्रों को हिन्दी ध्वनियों से ठीक परिचय प्राप्त होता है ।

(5) अध्यापक कक्षा में सस्वर वाचन का बार बार अभ्यास कराना चाहिए जिससे छात्र हिन्दी की उन ध्वनियों को पढ़कर आत्मसात कर लेते हैं ।

(6) हिन्दी अध्यापक छात्रों को हिन्दी शब्दों के अलन्त ध्वनियों को तेलुगु शब्दों के अजन्त ध्वनियों से तुलना करके समझाना चाहिए ।

(7) तेलुगु छात्रों के लिए हिन्दी का "चंद्रबिन्दु" नया प्रयोग है छात्र तेलुगु में इस ध्वनि का उच्चारण अनुस्वार के रूप में करते हैं । इसलिए हिन्दी अध्यापक इस ध्वनि के अन्तर को स्पष्ट करना चाहिए ।

(8) हिन्दी भाषा की प्रामाणिक ध्वनियों का परिचय देने में अध्यापक भाषा प्रयोगशाला की सहायता लेनी चाहिए । सरकार को इसकी व्यवस्था में विशेष ध्यान देना चाहिए ।

(9) छात्रों के ध्वनि संबंधी गलतियों को पहचानने के लिए हिन्दी अध्यापक स्वयं इस प्रान्त के छात्रों की मातृभाषा से परिचय प्राप्त करना चाहिए ।

(10) श्रवण कौशल को बढ़ाने म के लिए अनुस्तरित शिक्षण सामग्री टेपों के द्वारा बनाये जा सकती है ।

II (आ) भाषा कौशल - एक समस्या :

भाषा/ कौशल शिक्षण में प्रत्येक कौशल का मूल्यांकन अलग अलग रूप से करना उतना सरल कार्य नहीं है क्यों कि भाषा का अध्ययन स्वयं इन कौशलों की सामूहिक प्रक्रिया है । फिर भी यहाँ पर भाषण संबंधी कठिनाई को उपस्थित करनेवाले कारणों को प्रस्तुत किया गया है ।

भाषा कौशल में कठिनाइयों को उपस्थित करनेवाले कारण :

(1) छात्रों पर मातृभाषा की ध्वनि व्यवस्था का प्रभाव है ।

(2) छात्रों को हिन्दी में वार्तालाप करने का अभ्यास नहीं है ।

(3) छात्र नवीन ध्वनियों का अनुकरण कम करते हैं ।

(4) कक्षा में छात्रों को हिन्दी वार्तालाप का अभ्यास नहीं कराया जाता है ।

(5) अध्यापक हिन्दी शिक्षण तेलुगु माध्यम से देते हैं ।

(6) छात्र हिन्दी उच्चारण प्रक्रिया से परिचित नहीं है ।

आन्ध्र प्रान्त के 8 वीं कक्षा के छात्रों के भाषण संबंधी समस्या के उपर्युक्त कारणों के परिपेक्ष में शोधकर्ता ने निम्न सुझावों को प्रस्तुत किया है ।

सुझाव :

(1) हिन्दी अध्यापक छात्रों की मातृभाषा की ध्वनि व्यवस्था की तुलना हिन्दी ध्वनि व्यवस्था से करनी चाहिए ।

(2) अध्यापक कक्षा में हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए । छात्रों से हिन्दी में बातचीत करनी चाहिए और वार्तालाप का पर्याप्त अभ्यास करना आवश्यक है ।

(3) छात्रों को हिन्दी सुनने का मौका बाज़ार में कम मिलता है इसलिए अध्यापक स्वयं हिन्दी में बातचीत करना चाहिए । इसके अतिरिक्त रेडियो कार्यक्रमों सुनने का अवसर छात्रों को देना चाहिए और केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण संस्था, आगरे से उच्चारण संबंधी रिकार्ड खरीदने के लिए सरकार से सिफारिश करना चाहिए ।

(4) आदर्श उच्चारण को रिकार्ड करके अध्यापक छात्रों के सामने उपस्थित करना उचित होगा ।

(5) अध्यापक स्वयं हिन्दी के प्रेमी हो, छात्रों को हिन्दी में बातचीत करने का प्रोत्साहन देना चाहिए ।

(6) आन्ध्र प्रान्त में हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापक हिन्दी उच्चारण प्रक्रिया से छात्रों को परिचय देना चाहिए और उनको हिन्दी क्षेत्रों का भ्रमण करने का मौका देना चाहिए ।

2 (इ) वाचन कौशल - एक समस्या :

कठिनाइयों को उपस्थित करनेवाले कारण :

(1) छात्रों को हिन्दी वाक्य संरचना का ज्ञान कम है ।

(2) छात्र पुस्तक पढ़कर अर्थग्रहण नहीं कर सकते हैं ।

(3) छात्र अनुतान, बलाघात आदि पहचान कर पढ़ नहीं सकते हैं ।

(4) छात्र हिन्दी ध्वनियों से परिचय भी नहीं रखते हैं ।

(5) छात्रों को हिन्दी शब्द भण्डार का ज्ञान बहुत कम है ।

शोधकर्ता ने उपर्युक्त कठिनाइयों को उपस्थित करने वाले कारणों के परिप्रेक्ष में निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

सुझाव :

(1) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों को हिन्दी अध्यापक आदर्श वाचन के द्वारा हिन्दी ध्वनियों का परिचय कराना चाहिए ।

(2) अध्यापक आठवीं कक्षा के छात्रों को तेलुगु तथा हिन्दी ध्वनियों का तुलनात्मक परिचय देना चाहिए ।

(3) अध्यापक ध्वनि एवं अनुतान के नियमों का पालन करते हुए हाव-भाव के साथ आदर्श वाचन करना चाहिए ।

(4) अध्यापक छात्रोंके उच्चारण संबंधी दोषों को व्यक्तिगत वाचन कराकर पहचानना चाहिए और उनका निवारण स्वयं अथवा अन्य विद्यार्थियों की सहायता से करना चाहिए ।

(5) वाचन की गलती लेखन की गलती होती है इसलिए अध्यापक को सावधानी का पालन करना चाहिए ।

(6) अध्यापक छात्रों क से वाचन कराते समय विशेष रूप से ऐसे शब्दों का आदर्श वाचन प्रस्तुत करें जिनके लेखन तथा उच्चारण में काफी अन्तर हो ।

(7) सरकार एस० सी० ई० आर० टी० या अन्य शोध संस्थाओं में हिन्दी शब्द भण्डार का निर्माण स्तरानुसार करना आवश्यक है ।

2 (ई) लेखन कौशल - एक समस्या :

लेखन कौशल से संबंधित कठिनाइयों के कारण :

(1) मातृभाषा का प्रभाव छात्रों की लेखन व्यवस्था पर है ।

(2) छात्रों को वाक्य संरचना का ज्ञान नहीं है ।

(3) आन्ध्र के छात्र हिन्दी ध्वनियों को पहचान नहीं सकते हैं ।

(4) छात्रों को लिखने का अभ्यास बहुत कम है ।

(5) छात्रों को वर्तनी का ज्ञान बहुत कम है ।

(6) छात्र मौलिक रचना नहीं कर सकते हैं ।

लेखन संबंधी इन कठिनाइयों को निवारण करने के लिए शोधकर्ता ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

सुझाव :

(1) प्राथमिक कक्षाओं के छात्रों को लेखन सिखाने के लिए अध्यापक को कटे हुए वर्ण, शब्द एवं वाक्य साँचों की सहायता लेनी चाहिए ।

(2) मातृभाषा तथा हिन्दी की वाक्य संरचना का तुलनात्मक रूप छात्रों के सामने प्रस्तुत करना चाहिए ।

(3) लिपि सिखाने में छात्रों की भाषायी पृष्ठभूमि की सहायता लेनी चाहिए ।

(4) छात्रों को वर्तनी का ज्ञान सही रूप से सिखाने के लिए अध्यापक गृहकार्य, श्रुत लेखन आदि देकर वर्तनी की अशुद्धियों को निवारण करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

(5) मौलिक रचना सिखाने में व्याकरण का ज्ञान भी पाठ के संदर्भ के अनुसार देना चाहिए ।

(6) आन्ध्र के छात्रों को मौलिक रचना सिखाने के लिए मौखिक अभिव्यक्ति में निपुण बनाना चाहिए और उसके बाद छोटे छोटे वाक्यों के द्वारा छात्रों से परिचित विषयों पर स्तरानुसार निबंध लिखाने का प्रयत्न करना चाहिए ।

(7) अध्यापक किसी न किसी दैनंदिन घटना को आधार लेकर लेखन सिखाना चाहिए । इसमें छात्रों का मन लगता है ।

(8) पत्र लेखन, के द्वारा भी इन छात्रों को लेखन का अभ्यास कराया जा सकता है ।

(9) लेखन कौशल की वृद्धि करने के लिए हिन्दी लिपि से संबंधित अनुस्थरित अभ्यास पुस्तिकाएँ (work books) होनी चाहिए ।

2 (उ) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों की व्याकरण समस्याओं का अध्ययन :

कठिनाइयों के कारण :

(1) छात्रों को वाक्य से रचना का ज्ञान नहीं है ।

(2) आन्ध्र के छात्रों को संयुक्ताक्षर लिखने का ज्ञान नहीं है ।

(3) हिन्दी में दो लिंग है परंतु तेलुगु में तीन लिंग है ।

(4) हिन्दी का 'ने' प्रत्यय तेलुगु में नहीं है ।

(5) हिन्दी व्याकरण प्रयोगों में अनेक समता है ।

(6) हिन्दी तथा तेलुगु सर्वनामों में अन्तर है ।

(7) हिन्दी तथा तेलुगु के वर्णों में अन्तर है ।

उपर्युक्त कारणों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने निम्न सुझावों को प्रस्तुत किया है ।

सुझाव :

(1) हिन्दी के अध्यापक छात्रों को तेलुगु तथा हिन्दी भाषा के प्रकृतिगत भेद समझाना चाहिए ।

(2) अध्यापक छात्रों को संयुक्ताक्षर का ज्ञान हिन्दी ध्वनि व्यवस्था के आधार पर देना चाहिए ।

(3) तेलुगु भाषा-भाषी छात्रों को हिन्दी के लिंग भेद से संबंधित नियमों क से परिचय कराना चाहिए । निरंतर लेखन के अभ्यास से छात्रों को लिंग निर्णय करना आसान बन जाता है ।

(4) आन्ध्र के छात्र 'ने' प्रत्यय का प्रयोग बहुत कम जानते हैं । हिन्दी अध्यापक पाठ के संदर्भ में उनको व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराना चाहिए ।

(5) आन्ध्र के छात्रों को हिन्दी प्रत्यय का ज्ञान छात्रों की मातृभाषा तेलुगु से तुलना करके देना चाहिए ।

(6) तेलुगु सर्वनामों को समझाने में अध्यापक को वार्तालाप एवं मौखिक अभिव्यक्ति पर अधिक ध्यान देना चाहिए ।

(7) छात्रों को तेलुगु तथा हिन्दी के वर्णों का ज्ञान देते हुए उन वर्णों का परिचय देने चाहिए जो तेलुगु में न होकर हिन्दी में उपस्थित हैं ।

(8) अध्यापक व्याकरण के दोषों को बताते समय ही अधिक मात्रा में उनका निवारण करना चाहिए, जिसके लिए, लेखन का अभ्यास कराना भी आवश्यक है ।

(9) आन्ध्र के छात्रों को हिन्दी सिखानेवाले अध्यापक हिन्दी के व्यवहारिक व्याकरण सिखाने का प्रयत्न करें । संदर्भ के अनुसार व्याकरण शिक्षण देना चाहिए ।

(10) व्याकरण के नियमों को बताकर छात्रों के भाषा संबंधी भय का निवारण करना चाहिए ।

(11) हिन्दी तथा तेलुगु दो भिन्न परिवार की भाषाएँ होने के कारण

संरचना, क्रम, उच्चारण, आदि में अन्तर होना स्वाभाविक है । हिन्दी अध्यापक इन बातों का ज्ञान रखते हुए व्याकरण सिखाना चाहिए ।

(12) व्याकरण सारणियों की सहायता से व्याकरण शिक्षण दिया जायें ।

III 3 भाषा-अधिगम के प्रधान साधनों से संबंधित समस्याओं का अध्ययन :

1 पाठ्यक्रम की समस्या :

कठिनाइयों के कारण :

(1) पाठ्यक्रम स्तरानुसार नहीं है ।

(2) हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं है ।

(3) आठवीं कक्षा के छात्रों के मानसिक आयु के अनुरूप नहीं है ।

(4) मानक हिन्दी ध्वनियों तथा उनके उच्चारण का निर्देश नहीं है ।

(5) हिन्दी के आधारभूत शब्दों का उल्लेख नहीं है ।

(6) भाषा कौशलों पर अधिक महत्व नहीं दिया गया है ।

(7) स्थानीय पुट का समावेश पाठ्यक्रम में नहीं है ।

(8) पाठ्यक्रम क्रमबद्ध नहीं है ।

(9) पाठ्यक्रम में छात्रों की रूचियों एवं आवश्यकताओं पर कम ध्यान दिया है ।

(10) व्याकरण के नियमों पर अधिक ध्यान दिया गया है ।

(11) पाठ्यक्रम संकुचित है । प्रान्तीय आवश्यकताओं का ध्यान इसमें कम है ।

शोधकर्ता ने उपर्युक्त कारणों को दृष्टि में रखकर निम्न सुझाव दिये हैं ।

सुझाव :

(1) पाठ्यक्रम स्तरानुसार होना चाहिए । इसके निर्माण में छात्रों के भाषायी स्तर को दृष्टि में रखना चाहिए ।

(2) आठवीं कक्षा के पाठ्यक्रम के निर्माण में अनुभवी अध्यापकों की सहायता लेनी चाहिए ।

(3) पाठ्यक्रम में हिन्दी अध्यापक के लिए उचित निर्देश होने आवश्यक आवश्यक हैं । मानक हिन्दी ध्वनियों तथा उनके उच्चारण का निर्देश होना आवश्यक है ।

(4) पाठ्यक्रम साहित्य के पोषक न होकर छात्रों को भाषा ज्ञान देने में समर्थ हो ।

(5) पाठ्यक्रम में स्थानीय पुट को महत्व देना चाहिए । स्थानीय शब्द भण्डार एवं मुहावरों का स्थान इसमें हो ।

(6) व्यवहारिक व्याकरण पर ही अधिक ध्यान देना चाहिए । इससे छात्र भाषा सीखने में रुचि दिखाते हैं ।

(7) आन्ध्र प्रदेश सरकार से निर्धारित यह पाठ्यक्रम विदेशी भाषा शिक्षण को दृष्टि में रखकर तैयार किया गया है । इसका निर्माण स्तरानुसार होना चाहिए ।

(8) पाठ्यक्रम संक्षिप्त होना चाहिए । इसमें विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति हो ।

(9) 8 वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में परिवर्तित होना आवश्यक है । यह सामाजिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करने में विफल है ।

(10) पाठ्यक्रम में भाषा-शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों का निर्देश होना चाहिए ।

(11) पाठ्यक्रम छात्रों पर अधिक साहित्य का भार न डालें । यह विषय प्रधान न होकर भाषा प्रधान हो ।

2 **पाठ्यपुस्तक की समस्या :**

कठिनाइयों के कारण :

(1) 8 वीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक का बाहरी रूप ठीक नहीं है ।

(2) पाठ्यपुस्तक पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं है ।

(3) पाठ्यपुस्तक छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं है ।

(4) 8 वीं कक्षा की पुस्तक विषय प्रधान है ।

(5) पाठ्यपुस्तक में संपादन की दृष्टि से अनेक दोष हैं ।

(6) पाठ्यपुस्तक निर्माण में आधारभूत शब्दावली का ध्यान नहीं रखा गया है ।

(7) प्राचीन कविताओं का समावेश है ।

(8) पाठ्यपुस्तक चयन-समिति में अनुभावी अध्यापकों एवं विषय को पढ़ानेवाले अध्यापकों को महत्व नहीं दिया गया है ।

(9) प्रत्येक पाठ के अंत में भाषागत अभ्यास नहीं है ।

(10) पाठ्यपुस्तक का विषय आधुनिक परिस्थिति के अनुरूप नहीं है ।

(11) 8वीं कक्षा की पाठों के लेखक तेलुगु भाषी नहीं है ।

(12) पाठ्यपुस्तक के पाठ, नवीन शिक्षण विधियों के अनुरूप नहीं है ।

(13) पाठ्यपुस्तक में तेलुगु संस्कृति एवं आचार-विचारों का पुट प्राप्त नहीं है ।

उपर्युक्त कठिनाइयों के कारणों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने शोध सामग्री से प्राप्त दत्त के आधार पर निम्न महत्वपूर्ण सुझावों को प्रस्तुत किया है ।

सु झा व :

(1) आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक का बाहरी आवरण ठीक होना चाहिए । सुन्दर अक्षर, अच्छा कागज़ का प्रभाव छात्रों को पुस्तक पढ़ने की ओर अभिप्रेरित करता है ।

(2) आठवीं कक्षा की पाठ्युपुस्तक की पृष्ठ संख्या कम रहे ।

(3) पाठ्य-पुस्तक में पाठ्यक्रम के उद्देश्यों का निर्देश होना चाहिए।

(4) आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक संकलित होने के कारण छात्रों के स्तर के अनुरूप नहीं है । सरकार पाठ्यपुस्तक के पाठों को अनुभवी हिन्दी अध्यापकों से लिखाना चाहिए ।

(5) पाठ्यपुस्तक का निर्माण आधारभूत शब्दावली की सहायता से होना चाहिए ।

(6) आठवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक से प्राचीन कविताओं को निकालना उचित होगा । उसके स्थान पर आधुनिक कविताएँ हो ।

(7) पाठ्यपुस्तक चयन-समिति में अनुभवी, कक्षा अध्यापकों को स्थान देना चाहिए ।

(8) पुस्तक के अंत में भाषा-कौशल से सम्बन्धित अभ्यासों का होना आवश्यक है ।

(9) पाठ्यपुस्तक का विषय पुराना है । आधुनिक सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप होना चाहिए । विषय-वस्तु में भी क्रमबद्धता होनी चाहिए ।

(10) आठवीं कक्षा की हिन्दी पाठ्यपुस्तक का लेखक तेलुगु भाषी होना चाहिए ।

(11) द्वितीय भाषा शिक्षण की नवीन विधियों का शोध होना आवश्यक है ।

(12) आठवीं कक्षा की पाठ्य-पुस्तक के पाठ राष्ट्रीय संस्कृति के साथ साथ प्रान्तीय आचार-विचारों के प्रकट करने में समर्थ रहे ।

(13) गद्य पाठ सरल एवं संक्षिप्त रहे । प्रेमचन्द की भाषा का प्रयोग करें । छात्र पात्रों को आसानी से समझ सके और रुचि के साथ पढ सके ।

(14) कठिन शब्दों के अर्थ पाठ के अंत में हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषा में रहे ।

(15) आठवीं कक्षा की हिन्दी पुस्तक में संदर्भानुसार उचित चित्रों का स्थान हो । रेखाचित्रों का प्रभाव छात्रों पर ठीक न होगा ।

: :

3. शिक्षण विधि की समस्या

कठिनाइयों के कारण :

(1) अध्यापक नवीन हिन्दी शिक्षण विधियों का ज्ञान न रखना ।

(2) अध्यापक आवश्यकतानुसार किसी नवीन विधि का निर्माण करना ।

(3) अध्यापक व्याकरण अनुवाद-विधि को अपनाना ।

(4) हिन्दी पढ़ाने की कोई एक विधि पूर्ण न होना ।

(5) द्वितीय भाषा हिन्दी शिक्षण की विधियों का निर्णय न होना।

(6) उच्चारण सिखाने की उपयुक्त विधि न अपनाना ।

(7) द्वितीय भाषा शिक्षण एक कृत्रिम-विधि है । इसकी जानकारी अध्यापकों को न होना ।

शोधकर्ता ने शिक्षण विधि सम्बन्धी निम्न सुझावों को शोध सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किया है ।

सुझाव :

(1) अध्यापक द्वितीय भाषा शिक्षण विधियों का ज्ञान रखना आवश्यक है । उनको द्वितीय भाषा शिक्षण मनोवैज्ञानिक ढंग से देना चाहिए ।

(2) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों को हिन्दी शिक्षण देते समय अध्यापक प्रत्यक्ष एवं गठन पद्धति की सहायता लेनी चाहिए ।

(3) अध्यापक मातृभाषा की सहायता विशेष परिस्थिति में लेनी चाहिए

(5) हिन्दी शिक्षण में शिक्षक छात्रों की मातृभाषा के आघात को समझकर तदनुसार शिक्षण विधि का परिवर्तन कक्षा की विभिन्न परिस्थितियों के अनुरूप कर लेना चाहिए ।

(5) आन्ध्र प्रान्त का अध्यापक व्याकरण अनुवाद-विधि को नहीं अपनाना चाहिए जिससे अध्यापक कक्षा में हिन्दी वातावरण का जन्म नहीं दे सकते हैं ।

(6) अध्यापक उच्चारण सिखाने की उपयुक्त विधियों का पालन करना चाहिए ।

(7) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों को द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी सिखाने की एक नवीन विधि का होना आवश्यक है ।

4. सहायक सामग्री की समस्या

कठिनाइयों के कारण

(1) आन्ध्र प्रान्त के अध्यापकों को पाठ्यपुस्तक की प्रति पढ़ाने ~~के~~ के लिए प्राप्त नहीं होती हैं ।

(2) आन्ध्र प्रान्त की पाठशालाओं में सहायक ग्रन्थ, शब्द-कोष आदि प्राप्त नहीं है ।

(3) पाठशाला में शब्द सूचियाँ, संरचना की सूचियाँ - प्राप्त नहीं होती हैं ।

(4) मानचित्र, चित्र विस्तारक आदि का अभाव है ।

(5) भाषा-चित्र, ध्वनि चित्र, स्लाइड्स, भाषा प्रयोगशाला, प्रोजेक्टर आदि अप्राप्त है ।

(4) हिन्दी तथा तेलुगु के तुलनात्मक एवं व्यतिरेकात्मक सामग्री उपलब्ध नहीं है ।

(7) पाठशालाओं में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ भी प्राप्त नहीं है ।

(8) हिन्दी विषय सम्बन्धी सहायक सामग्री की व्यवस्था पर सरकार मूक हैं ।

(9) सहायक सामग्री के निर्माण के लिए एस · सी · इ · आर · टी · में कोई मार्गदर्शन-विभाग या वर्कशापल नहीं है ।

इन कठिनाइयों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने सहायक सामग्री की समस्या को सुलझाने के लिए निम्न सुझाव दिया है ।

<u>सु झा व</u> :

(1) सरकार हिन्दी पढ़ानेवाले सभी अध्यापकों के पढ़ानेवाली पुस्तक की एक प्रति देनी चाहिए ।

(2) सरकार हिन्दी के शब्द-कोश और सहायक पुस्तकों के लिए विशेष बजट देना आवश्यक हैं ।

(3) आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापक स्वयं उनकी पाठशाला की आवश्यकताओं के अनुसार शब्द-सूचियाँ, संरचना की सूचियाँ तैय्यार कर लेनी चाहिए ।

(4) प्रत्येक पाठशाला में हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ मंगवाकर छात्रों को उन्हें पढ़ने का प्रोत्साहन देना चाहिए ।

(5) प्रान्तीय एवं केन्द्रीय सरकार हिन्दी शिक्षण को सुचारु रूप से देने के लिए उपयुक्त आधुनिक सहायक साधनों का वितरण प्रत्येक स्कूल के लिए करना चाहिए ।

(6) प्रान्तीय सरकार सहायक साधनों के निर्माण के लिए एक वर्कशाप का आयोजन करना उचित होगा । जिससे हिन्दी अध्यापकों को सही मार्गदर्शन मिल सकता है ।

(7) एस • सी • इ • आर • टी • में हिन्दी का एक विभाग मार्गदर्शन के हेतु खोलना आवश्यक है । इसकी एक शाखा आन्ध्र प्रान्त में भी रहे ।

(8) छात्रों को पाठशाला में रेडियो के द्वारा आदर्श हिन्दी पाठों को सुनने का मौका देना चाहिए ।

5. हिन्दी अध्यापक की समस्याएँ

कठिनाइयों के कारण :

(1) हिन्दी अध्यापकों में हिन्दी के प्रति रुचि नहीं है ।

(2) हिन्दी अध्यापकों में प्रचारक भावना कम है ।

(3) अधिकारी हिन्दी अध्यापकों की आवश्यकताओं के प्रति ध्यान नहीं देते हैं ।

(4) हिन्दी अध्यापकों की पर्याप्त संख्या नहीं है ।

(5) निम्न कक्षाओं के पढ़ाने के लिए हिन्दी अध्यापकों का ~~अभाव~~ अभाव है ।

(6) अनुभवी हिन्दी अध्यापकों को पाठ्यपुस्तक चयन समिति में स्थान नहीं दिया जाता है ।

(7) द्वितीय ग्रेड के अध्यापक उच्च कक्षाओं को पढ़ाने पर भी पर्याप्त विशेष अनुदान नहीं देना ।

(8) आन्ध्र की पाठशालाओं में सहायक पुस्तकों एवं संदर्भ-ग्रंथों का अभाव है ।

शोधकर्ता ने इन कारणों को दृष्टि में रखकर निम्न सुझाव प्रस्तुत किये हैं ।

सु झा व :

(1) हिन्दी अध्यापक हिन्दी भाषा का प्रचार एवं प्रसार में कर्मठ होना चाहिए ।

(2) हिन्दी अध्यापक छात्रों की मातृभाषा से परिचय प्राप्त करना चाहिए ।

(3) आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापक को साहित्य ज्ञान के साथ साथ भाषा कौशलों पर पूर्व अधिकार रखना चाहिए ।

(4) हिन्दी अध्यापक तेलुगु और हिन्दी व्याकरणों का तुलनात्मक एवं व्यतिरेकात्मक अध्ययन करें ।

(5) आन्ध्र प्रान्त का हिन्दी अध्यापक छात्रों की रुचि, अभिप्रेरणा आदि की सहायता से भाषा शिक्षण रोचक ढंग से देने का प्रयत्न करना चाहिए ।

(6) शिक्षक छात्रों की भाषा संबंधी त्रुटियों को सतर्कता से निवारण करना चाहिए । इनके ओर व्यक्तिगत ध्यान देना उचित होगा ।

(7) आन्ध्र प्रान्त के हिन्दी अध्यापक मंद बुद्धि छात्रों के कारणों को पहचान कर उनको उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) देना चाहिए ।

(8) सरकार प्रत्येक हाईस्कूल के लिए एक प्रथम ग्रेड हिन्दी पण्डित तथा उच्च प्राथमिक कक्षा के लिए एक द्वितीय ग्रेड हिन्दी पंडितों की नियुक्ति करनी चाहिए ।

(9) हिन्दी अध्यापकों के स्तर को बढ़ाने के लिए सरकार समय समय पर परिसंवादों, कार्यशालाओं और शिविरों का आयोजन हिन्दी प्रान्तों में करना चाहिए ।

(10) हिन्दी अध्यापक शिक्षण के सामान्य एवं विशिष्ट सिद्धान्तों का ज्ञान रखकर हिन्दी शिक्षण को ईमानदारी से देना चाहिए।

(11) प्रशिक्षण के समय हिन्दी अध्यापक को पूरा वेतन देना चाहिए ।

(12) उच्च कक्षाओं को पढ़ानेवाले द्वितीय ग्रेड हिन्दी पण्डितों को रु॰ 25/= अधिक पारिश्रमिक देना चाहिए ।

6. हिन्दी मूल्यांकन समस्या

कठिनाइयों के कारण :

(1) भाषा समस्या अनिश्चित होना ।

(2) आन्ध्र प्रदेश में द्वितीय भाषा के उद्देश्य अस्पष्ट है ।

(3) प्रत्येक कक्षा के लिए आधारभूत शब्दावली का निर्माण नहीं है ।

(4) द्वितीय भाषा की सभी पुस्तकें संकलित हैं ।

(5) एस॰ एस॰ सी॰ परीक्षा के हिन्दी अंक कुल योग में नहीं मिलाना ।

(6) मूल्यांकन की विधि में एकरूपता नहीं है ।

(7) अध्यापक छात्रों के भाषा-स्कैशल का मूल्यांकन नहीं करना ।

इन कठिनाइयों के कारणों को दृष्टि में रखकर शोधकर्ता ने आन्ध्र प्रान्तके 8वीं कक्षा के छात्रों के लिए मूल्यांकन संबंधी निम्न सुझाव प्रस्तुत किया हैं ।

सुझाव :-

(1) भाषा समस्या एवं आन्ध्र प्रदेश की भाषा-नीति स्पष्ट होना आवश्यक है । क्योंकि इसका प्रभाव मूल्यांकन पर भी होता है ।

(2) आन्ध्र प्रदेश में द्वितीय भाषा हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों का निर्माण आन्ध्र प्रान्त को दृष्टि में रखकर करना चाहिए ।

(3) भाषा का अध्यापन सभी प्रान्तों के लिए एक ही कक्षा से आरंभ करना चाहिए ।

(4) सार्वजनिक परीक्षा में उत्तीर्ण होना आवश्यक समझे ।

(5) आन्ध्र प्रान्त के छात्रों की उत्तर पुस्तकों का मूल्यांकन संपूर्ण आन्ध्र प्रदेश के छात्रों के साथ तब तक नहीं करना चाहिए जब तक छात्रों का स्तर दूसरे प्रान्तों के छात्रों से समान न हो ।

(6) प्रत्येक कक्षा के लिए आधारभूत शब्दावली का निर्माण हो।

(7) पाठ्यपुस्तकों का निर्माण अनुभवी हिन्दी अध्यापकोंसे हो।

(8) हिन्दी प्रश्न-पत्रों में भाषा-कौशल संबंधी प्रश्न अधिक हो।

(9) मूल्यांकन के उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर हिन्दी अध्यापक मूल्यांकन करना चाहिए ।

(10) शिक्षण विधियों में एकरूपता होनी चाहिए, इससे मूल्यांकन सत्य एवं वस्तुनिष्ठ होगा ।

भावी शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सुझाव :

शोधकर्ता को अपने शोधकार्य के हेतु विभिन्न व्यक्तियों से मिलने एवं गहन अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ । ऐसा करते समय शोधकर्ता ने कुछ नवीन समस्याओं का आभास प्राप्त किया है । इनको हमने भावी शोधकर्ताओं के लिए सूचित करना उचित समझा है । सभी समस्याओं को एक ही व्यक्ति विस्तारपूर्वक बताना या चर्चा करना संभव नहीं है । इसलिए भावी शोधकर्ताओं को इनसे संबंधित अन्य समस्याओं पर विद्वत्तापूर्ण प्रकाश डालने हेतु निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं ।

१. हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के रूपों में भिन्नता और समानता का अध्ययन ।

(अ) ध्वनियों की दृष्टि से – स्वर, व्यंजन, संयुक्त ध्वनियाँ

(आ) शब्द रूप की दृष्टि से - तत्सम और तद्भव तथा विभिन्न स्रोतों के सम रूप, समानार्थी शब्द रूप, समरूप भिन्नार्थी शब्दों का लिंग निर्धारण ।

(इ) प्रयोग तथा वाक्य रचना - लिंग, वचन के आधार पर वाक्य के रूप में परिवर्तन, परसर्गों के प्रयोग की विविधता और विस्तार, क्रिया प्रयोग के काल भेद, वाच्य भेद, सहायक क्रियाएँ, पुरुष, वाक्य, शैलियाँ और उन पर अंग्रेजी प्रभाव का अध्ययन ।

(ई) प्रचलित लोकोक्तियाँ, मुहावरे और अन्य लाक्षणिक प्रयोग

(उ) हिन्दी की वर्तनी और व्याकरण प्रयोगों की अनेक रूपता और अनिश्चयात्मकता के कारण कठिनाइयाँ ।

(ऊ) हिन्दी की शैलिगत कठिनाइयाँ — सरल, व्यवहारिक शैली, संस्कृत शब्दावली प्रधान शैली, अँग्रेजी से प्रभावित शैलियाँ, प्रादेशिक शैलियाँ ।

2 हिन्दी लिपि में संशोधन, परिवर्धन और सरलीकरण की वांछनीयता ।

3 हिन्दी उच्चारण की समस्यायें

(क) अन्य भाषाओं क में न मिलनेवाली हिन्दी ध्वनियाँ और उनका उच्चारण ।

(ख) शब्दों के उच्चारण में स्वर लोप, [illegible] बलाघात, अनुतान, वेग, लाघव आदि ।

(ग) वाक्यों के उच्चारण में बलाघात, अनुतान, वेग, लाघव आदि ।

(घ) गद्य और पद्य के विविध रूपों एवं अवतरणों को भिन्न भिन्न रूपों से पढ़ना ।

4 हिन्दी शिक्षण विधियों की समस्यायें :- प्रथम तथा द्वितीय भाषा शिक्षण की मनोवैज्ञानिकता विधि और मानक विधि का स्पष्टीकरण ।

5 हिन्दी पर अँग्रेजी भाषा का प्रभाव ।

6 मानक हिन्दी ध्वनियों का और उनके उच्चारण का निर्धारण ।

7 हिन्दी वर्तनी का निर्धारण ।

8 हिन्दी की आधारभूत शब्दावली का निर्धारण ।

9 व्याकरण प्रयोगों की अनेक रूपता और अस्थिरता जन्य कठिनाइयाँ ।

10 अहिन्दी भाषी क्षेत्रों की विशिष्ट समस्यायें

(1) लिंग निर्णय

(2) 'ने' प्रयोग संबंधी सुधार

(3) कारकों का प्रयोग

(4) क्रिया का संज्ञा / कर्म के अनुसार प्रयोग

(5) अनुस्वार तथा अनुनासिकों का प्रयोग

11 प्रादेशिक भाषाओं और हिन्दी के व्याकरणों का तुलनात्मक अध्ययन ।

12 द्वितीय भाषा हिन्दी के उद्देश्य स्पष्ट न होने से उत्पन्न समस्यायें ।

13 विभिन्न प्रान्तों के हिन्दी अध्यापकों की समस्यायें ।

14 विभिन्न संस्थाओं की हिन्दी उपाधियों के कारण उत्पन्न होनेवाली समस्यायें ।

15 भारत के परिपेक्ष में राष्ट्रभाषा की समस्या एवं समाधान ।

**